फरीदाबाद
मजदूर समाचार
जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम
नई सीरीज नम्बर 285 1/- मार्च 2012

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabad majdoorsamachar.blogspot.com >
डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

बातचीतों के लिये निमन्त्रण
मजबूरियों से पार पाने के उपायों पर चर्चायें
केन्द्र में : व्यवहार-व्यवहार-व्यवहार

●चाहे-अनचाहे आज विश्व के सात अरब लोग जुड़े हैं। वर्तमान समाज व्यवस्था ने सब को जोड़ा है – बाँधा है कहना अधिक उचित होगा। जबरन वाले जोड़ बहुत पीड़ा लिये हैं। इच्छा वाले जोड़ों में हँसी-खुशी-उल्लास होते हैं। दुनिया-भर में इच्छा वाले जोड़ों के लिये अनगिनत प्रयास हुये हैं और यह तेजी से बढते आ रहे हैं।

●हम में प्रत्येक जो इच्छित जोड़ बनाती-बनाता है वे पूरे नहीं पड़ रहे। इस या उस कोण से, इस अथवा उस परिस्थिति में, इतने समय में अपने इच्छित जोड़ों में हम कमियाँ पाते हैं। अपने जोड़ों को हम अपर्याप्त पाते रहे हैं।

●ऊँच-नीच, अमीर-गरीब, मेरी-तेरी, लाभ-हानि वाली समाज व्यवस्थाओं में टेढापन बहुत होता है। और फिर, ठहराव नहीं बल्कि गतिशीलता है। प्रकृति में हो चाहे समाज में, हर चीज हर समय बदलती रहती है। रुपये-पैसे, मण्डी-मुद्रा, बिक्री के लिये उत्पादन, मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन ने अलग-थलग को मिटा कर पृथ्वी पर सम्पूर्ण मानव योनि को तानों-बानों में कस दिया है। जटिलता और परिवर्तन इतने अधिक हो गये हैं कि व्यक्ति तो क्या, यह संस्थाओं की समझ के बाहर हो गये हैं।

●आज व्यक्ति हो, छोटी संस्था हो, बड़ी संस्था हो, वैश्विक संस्था हो, हर विषय में गलत साबित होना सामान्य है। किसी के किसी के भी बारे में आंकलन का सही होना तुक्के की श्रेणी में आता है। गलती-गलतियाँ कहाँ हुई-क्यों हुई के विश्लेषण स्वयं में विशाल आकार ग्रहण कर चुके हैं।

●एक क्षण की वास्तविकता का आंकलन भी आज इतना कठिन बना है। पल भर में परिवर्तित वास्तविकता ज्ञानियों-विशेषज्ञों को नाकारा की श्रेणी में धकेल देती है। आज ज्ञान उत्पादन की फैक्ट्रियाँ-संस्थायें दिवालिया हो गई हैं।

● हम में प्रत्येक का हर जगह और हर समय वास्तविकता के किसी न किसी पहलू से वास्ता पड़ता है। जिस पहलू के हम रूबरू होते हैं उसके आंकलन में गलती को सामान्य तौर पर हम तुरन्त भुगतते हैं। एक अत्यन्त नाजुक सन्तुलन......

●इसलिये गलतियाँ करना कोई लज्जा की बात नहीं है। गलत साबित होने पर शरमाने की आवश्यकता नहीं है। दरअसल वर्तमान समाज व्यवस्था में व्यक्ति अधिकाधिक गौण होती गई है। आज व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना इस समाज व्यवस्था के पैमाने पर बराबर-सा हो गया है। इसलिये "मैं गलत नहीं हूँ"..... गलती से भयभीत होने की स्थिति।

●लड़खड़ा रही वर्तमान समाज व्यवस्था पर केन्द्रित होने की बजाय आवश्यकता विकल्पों को देखने की है। लगता है कि एकमेव और एकमय का युग दस्तक दे रहा है।

●वर्तमान व्यवस्था के संस्थागत चरण में, चेहराविहीन स्वरूप में जहाँ व्यक्ति गौण बना है वहीं विकल्पों के लिये प्रत्येक व्यक्ति अधिकाधिक महत्वपूर्ण बनी-बना है। आज हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है और सब का साझा होना महत्वपूर्ण है। चन्द की सक्रिय पहलकदमी और बहुसँख्यक के पीछे-पीछे चलने वाले तौर-तरीके अपनी अन्तिम साँसें ले रहे हैं।

●आज ऐसे तौर-तरीकों की आवश्यकता है जो सात अरब लोगों की सक्रिय साझेदारी में योगदान दे सकें। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। आरम्भ हम 25 मार्च वाले रविवार से कर रहे हैं। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक और मुजेसर के बीच गन्दे नाले की बगल में ऑटोपिन झुग्गियों में प्रवेश करते ही मजदूर लाइब्रेरी है (झुग्गी नम्बर 3)। बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस (अब प्लान्ट बन्द है) होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

●आप अनपढ हैं या पढे-लिखे हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है। आप युवा हैं अथवा वृद्ध, इसका महत्व नहीं। हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिक्र रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

●कदम हम वर्तमान में ही उठा सकते हैं। वर्तमान में हम निकट भविष्य वाले कदमों की तैयारियाँ भी कर सकते हैं। क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। हाँ, यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि न तो वर्तमान कोई समरस इकाई है और न ही विगत में सब कुछ एक समान था। हम में से किसी का आज वास्तविकता के जिस पहलू से वास्ता है उसकी गहरी छाप उस पर स्वाभाविक है। और, आज की वास्तविकता में मजदूरों में ही काफी भिन्नताओं के संग-संग किसान, दस्तकार, दुकानदार भी कई स्तर व स्वरूप लिये हैं। फिर, बीते हुये कल की भिन्न-भिन्न छापें भी अपने असर लिये हैं। इसलिये एक अनुरोध : कृपया वाक्‌युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये ; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये ; आदरपूर्ण बातचीत की कोशिश कीजिये। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।■

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है।

बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है। महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

फैक्ट्रियों में कानूनों की एक झलक

● *दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक 6656 रुपये (8 घण्टे के 256 रुपये); अर्ध-कुशल श्रमिक 7358 रुपये (8 घण्टे के 283 रुपये); कुशल श्रमिक 8112 रुपये (8 घण्टे के 312 रुपये) ।* ●**हरियाणा सरकार** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.1.2012 से डी. ए. के 203 रुपये जुड़ने के बाद : *अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4847 रुपये (8 घण्टे के 186 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 5497 रुपये (8 घण्टे के 211 रुपये) ।*

सेन्चुरी मैटल रीसाइक्लिंग मजदूर : "ततारपुर गाँव, जिला पलवल स्थित फैक्ट्री में कन्टेनरों में कबाड़ आता है जिसमें बम भी होते हैं। कन्टेनर खाली करते समय बम फटने से एक मजदूर की मृत्यु हो चुकी है। पाँच-छह ठेकेदारों के जरिये रखी 270 महिला मजदूर कबाड़ की छँटाई करती हैं। ततारपुर, बघौला, पृथला गाँवों से पैदल, फरीदाबाद से दो बसों में और पलवल से 6 थ्रीव्हीलरों में महिला मजदूर फैक्ट्री आती हैं। एक थ्रीव्हीलर में 15 होती हैं, आने-जाने के दौरान एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं। ड्युटी सुबह 8 से साँय 6½ की है और सुपरवाइजर बदतमीजी से पेश आते हैं – ए बुढिया इधर आ, यह कर, वहाँ जा, काम करने नहीं आती, हरामखोरी करने आती है। पुरुष मजदूरों की सुबह 7 से रात 7 की तथा रात 7 से अगली सुबह 7 की और जनरल शिफ्ट हैं। महीने में 5-6 बार लगातार 36 घण्टे काम करवाते हैं। जबरन रोकते हैं, कार्ड पर जब तक सुपरवाइजर हस्ताक्षर नहीं करते तब तक गार्ड फैक्ट्री से बाहर नहीं निकलने देते। साप्ताहिक अवकाश नहीं, कोई छुट्टी नहीं – 26 जनवरी, 15 अगस्त, 2 अक्टूबर, होली, दिवाली को बाहर का गेट बन्द और अन्दर काम। महीने में 200 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में 200 स्थाई मजदूर और बीस ठेकेदारों के जरिये रखे 650 मजदूर काम करते हैं। पन्द्रह ठेकेदारों के जरिये रखे 200 मजदूरों की ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में कबाड़ से अल्युमिनियम की सिल्लियाँ बनती हैं और ताम्बा, जिन्क आदि दस तरह की चीजें छाँटी जाती हैं। आठ भट्टियाँ हैं – विस्फोट होते रहते हैं, 13 फरवरी की रात एक भट्टी में दो बार विस्फोट हुये। काम बन्द नहीं करते, भट्टी मजबूत बनी हैं, उछल कर पिघली धातु भट्टी पर तथा आसपास गिरती है – सामग्री भर कर, गेट बन्द कर फायर करते हैं इसलिये विस्फोट से नुकसान कम होता है..... ...भट्टी का गेट खुला हो तो मजदूर जल जाते हैं। बमों को सीधे भट्टियों में नहीं डालते – लेथ मशीन पर बाँध कर इनकी अल्युमिनियम की परत हटाते हैं, गर्म होने से अन्दर की बारूद में कभी आग लग जाती है तब मजदूर मशीन छोड़ कर भाग जाते हैं। गाली और डाँटना चलता रहता है। गन्दे शौचालय से सटा है पीने के पानी का स्थान।"

शाही एक्सपोर्ट हाउस श्रमिक: "15/1 मथुरा रोड़ (सैक्टर-31) फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में **एच एण्ड एम** का माल बनता है और इस समय काम बहुत ज्यादा है। फरवरी में साप्ताहिक अवकाश वाले दिन, हर रविवार को ड्युटी। पैकिंग विभाग में 500 मजूर प्रतिदिन सुबल 9 से रात 1 बजे तक काम करते हैं और जब शिपमेन्ट जाती है तब अगली सुबह 6 बजे तक (तीन घण्टे के ब्रेक के बाद फिर 9 बजे से काम में लगना)। इस्त्री करने वाले 100 मजदूर प्रतिदिन सुबह 9 से रात 9½, रात 1 बजे तक, अगली सुबह 6 बजे तक काम करते हैं। पुरुष चैकर सुबह 9 से रात 9½ रोज और महीने में 15 बार रात 1 तक तथा 3-4 बार अगली सुबह 6 बजे तक काम करते हैं। महिला मजदूरों को साँय 7 बजे छोड़ देते हैं – सिलाई में सुबह 8½ से साँय 7 और फिनिशिंग में सुबह 9 से साँय 7, लेकिन धागे काटने वालियों की फरवरी में सुबह 7 से साँय 7 ड्युटी रही। धागे काटने की 6 लाइन नीचे और 6 लाइन ऊपर हैं – ऊपर की 3 लाइनों में मजदूर ठेकेदार के जरिये रखी हैं, इन्हें ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से। कम्पनी मजदूरों से प्रतिघण्टा टारगेट माँगती है। इधर जनवरी से फिनिशिंग विभाग में एक नया नियम बनाया है। इनिशियल चैकर पीस के अन्दर की जाँच और फाइनल चैकर पीस के बाहर की जाँच करते थे पर अब एक ही चैकर पीस के अन्दर व बाहर की जाँच करे। टारगेट 15 पीस प्रतिघण्टा। कोई भी कमी निकलने पर पहले जहाँ फीडर उसे ठीक करवाने ले जाते थे, अब स्वयं चैकर ले जायें। हर दो घण्टे में चैकर अपने पीस क्वालिटी में ले कर जाये, ऑडिट करवाये, पास करवाये.....ऑडिट में एक पीस में भी कमी निकलने पर पूरे 30 पीस की फिर से जाँच करो और फिर ऑडिट करवाओ। इससे जाँचे गये पीस की सँख्या कम होती है। इस पर प्रोडक्शन मैनेजर अपनी टेबल पर बुला कर धमकाता है और फिंगर पंच करवा देता है..... फिंगर पंच मानी तुम फैक्ट्री से बाहर हो चुके हो जबकि तुम फैक्ट्री में ही काम कर रहे होते हो। यानी, मुफ्त में काम करो – पूरा दिन काम करने पर भी हाफ डे लग जाता है। प्रोडक्शन मैनेजर कहता है कि 15 पीस प्रतिघण्टा मतलब 8 घण्टे में 120 पीस और यह सँख्या पूरी नहीं हुई तो रुको, पूरी करके जाओ। एक-डेढ घण्टे रुकने के कोई पैसे नहीं। इस चक्कर में मजदूर पानी-पेशाब के लिये भी नहीं जा पाते.... गर्मी आ रही है – टारगेट के फेर में मजदूर फिर बेहोश होंगे। ओवर टाइम में 15 मिनट का टी-ब्रेक भी कम्पनी नहीं देती। साहब लोग डाँटते सब मजदूरों को हैं पर गाली पुरुष मजदूरों को ही देते हैं..... जनवरी में सिलाई विभाग में मास्टर ने एक महिला कारीगर को गाली दी तो उसे चप्पलों से पीटते हुये एच आर विभाग ले गई। उस मास्टर की नौकरी गई पर फिर किसी अन्य मास्टर ने अपनी लाइन में नहीं लिया (50 लाइन हैं) इसलिये वह महिला मजदूर भी नौकरी छोड़ गई। फैक्ट्री में 2000 महिला मजदूर और 1500 पुरुष मजदूर हैं।"

श्रीराम इंजिनियर्स कामगार : "प्लॉट 54 सैक्टर-5 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को 8½-8½ घण्टे की ड्युटी, शिफ्ट बदलती हैं। मजदूर समाचार के जनवरी अंक में गलत छपा है कि स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से करते हैं। वास्तव में सब मजदूरों को, 65-70 स्थाई मजदूरों और दो ठेकेदारों के जरिये रखे 125 वरकरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से करते हैं। फैक्ट्री में होण्डा का काम भी नहीं होता, यहाँ सिर्फ मारुति सुजुकी के शॉकर के हिस्से बनते हैं। काम का भारी दबाव है, डायरेक्टर सिर पर खड़ा रहता है, 35 पावर प्रेसों पर एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं, हाथ कटते हैं – प्रायवेट में पट्टी के बाद ई.एस.आई. भेज देते हैं। पावर प्रेसों पर काउन्टिंग मीटर लगे हैं फिर भी डायरेक्टर पीछे खड़ा हो जाता है..... नुकसान पर तनखा से पैसे काटते हैं, एक मजदूर के 3000 रुपये काटे, दूसरे मजदूर का 15 दिन गेट बन्द किया। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे तनखा से हर महीने काटते हैं पर 6 महीने बाद जमा करते हैं। कई वर्ष से काम कर रहा एक मजदूर फैक्ट्री में एक्सीडेन्ट में घायल हुआ, 2½ महीने ड्युटी नहीं कर सका, ई.एस. आई. में उपचार हुआ पर बोले कि पैसे की हकदारी नहीं बनती..... मजदूरों ने कम्पनी पर दबाव डाला तब ई.एस.आई. ने घायल मजदूर को दो सप्ताह के पैसे दिये। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को 4-5 महीने में निकाल देते हैं और फिर रख लेते हैं तथा इन मजदूरों के फण्ड के पैसे खा जाते हैं। स्थाई मजदूरों के ई.एस.आई. व पी.एफ. नम्बर बदलवा कर 10 वर्ष वाले को 4 वर्ष से दिखाते हैं..... पिछले वर्ष नवम्बर में 11 मजदूरों के ऐसे नम्बर बदले तो हम ने विरोध किया और काफी खींचा-तान के बाद उन्हें पुराने नम्बर दिये।"

एस एम एस एक्सपोर्ट हाउस वरकर : "प्लॉट डी-28 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित

रजिस्ट्रेशन ऑफ न्यूज पेपर सेंटर रूल्स 1956 के अनुसार स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (रूल नं. 8)

फरीदाबाद मजदूर समाचार

1. प्रकाशन का स्थान	मजदूर लाइब्रेरी आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद–121001
2. प्रकाशन अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
4. प्रकाशक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)
5. संपादक का नाम	शेर सिंह (क्या भारत का नागरिक है? हाँ)

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रनिशत से अधिक के साझेदार हों। केवल शेर सिंह मैं, शेर सिंह, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनाँक 1 मार्च 2012 हस्ताक्षर शेर सिंह प्रकाशक

फैक्ट्री में 124 सिलाई कारीगरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. थी और दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी। पिछले वर्ष दिवाली पर बोनस में एक तनखा (8.33%) के लिये टेलरों ने काम बन्द किया। तीन दिन मशीनें बन्द रखी। मैनेजमेन्ट ने इसे गैर-कानूनी हड़ताल घोषित किया। कारण बताओ नोटिस दिये। कुछ मजदूरों ने एक यूनियन, कुछ ने दूसरी यूनियन के जरिये जवाब दिये और कुछ ने जवाब ही नहीं दिये। साहब बोले कि नोटिस यह देखने के लिये दिये थे कि कितने मजदूर यूनियन में हैं और तीन दिन के पैसे नहीं काटेंगे। कम्पनी ने बोनस में मात्र 3100 रुपये दिये। कम्पनी ने ओवर टाइम बन्द कर दिया, ड्युटी 8 घण्टे की कर दी। और, अक्टूबर की तनखा जब दी तब तीन दिन के पैसे काट लिये। कुछ मजदूरों ने मैनेजर के थप्पड़ मारे। नवम्बर में कम्पनी ने पूरे महीने ओवर टाइम करवाया। फिर नोटिस लगाया कि घाटा हुआ है इसलिये प्रत्येक सिलाई कारीगर की तनखा से 5000 रुपये काटेंगे। तनखा देते समय 7 दिसम्बर को पैसे काटने लगे तो टेलरों ने विरोध किया और इस पर उनका गेट रोक दिया। कम्पनी ने दोनों यूनियनों से समझौता कर 10 दिसम्बर को 124 टेलरों का हिसाब कर दिया। जो 15-20 सिलाई कारीगर किसी यूनियन में नहीं थे उन्हें कम्पनी ने हिसाब लेने के लिये इस या उस यूनियन की पर्ची काटने को कहा। पर्ची काटना मतलब हिसाब का दस प्रतिशत यूनियन लीडर को देना। ओखला का रेट है हिसाब में से दस प्रतिशत यूनियन लीडर का। टेलरों के हिसाब में 35-40,000 रुपये बने, प्रत्येक से इस या उस यूनियन लीडर ने 3500-4000 रुपये लिये। कम्पनी ने 124 को निकालने के तत्काल बाद 215 सिलाई कारीगर भर्ती किये जिनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं — अब उन्हें 8 घण्टे के 225-240-260 रुपये देते हैं और रोज 12 घण्टे की तथा रविवार को 8 घण्टे की ड्युटी, ओवर टाइम सिंगल रेट से। फिनिशिंग विभाग में स्थिति पहले वाली है — 250 मजदूरों की ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, तनखा 3500-4000 रुपये और 12-16 घण्टे की ड्युटी, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कम्पनी की ओखला फेज-1 में सी-170 तथा सी-174 स्थित फैक्ट्रियों में सिर्फ सिलाई होती है, उनकी फिनिशिंग भी डी-28 में।"

जय स्विच मजदूर : "407 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में 300 मजदूर **महिन्द्रा जायलो, टाटा सूमो, टाटा 407, टोयोटो इनोवा, मारुति सुजुकी** वाहनों के स्टियरिंग लॉक और चाबी बनाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। दिसम्बर में किये ओवर टाइम के 15 दिन के पैसे 15 फरवरी को दिये ..... 25 फरवरी को दिसम्बर के बाकी 15 दिन के ओवर टाइम के पैसे माँगने पर कम्पनी ने पुलिस बुला ली जो एक मजदूर को पकड़ कर ले गई। कम्पनी ने उस मजदूर को नौकरी से निकाल दिया है और उसे दिसम्बर के 15 दिन, जनवरी, फरवरी के 24 दिन के ओवर टाइम तथा फरवरी के 24 दिन की तनखा देने से इनकार कर दिया है — डायरेक्टर बोला कि पुलिस को पैसे दिये हैं, अब उस मजदूर को एक पैसा भी नहीं देंगे।"

किरण उद्योग श्रमिक : "प्लॉट 23 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 300 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में डाइकास्टिंग द्वारा **होण्डा, हीरो** दुपहियों और **मारुति सुजुकी** कारों के हिस्से-पुर्जे बनाते हैं। सप्ताह में शिफ्ट बदलती है तब शनिवार की रात वालों की 20 घण्टे और फिर रविवार को दिन वालों की 16 घण्टे ड्युटी। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।"

कुंज बिहारी प्रोसेज कामगार : "प्लॉट 95-96 सैक्टर-25, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 700 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में **ओरियन्ट क्राफ्ट, रादनिक, कनिका, ओम फैशन** आदि के कपड़ों की रंगाई करते हैं। मेन्टेनैन्स के 7-8 मजदूर ही स्थाई हैं और बाकी सब वरकरों को आठ ठेकेदारों के जरिये रखा है। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 26 दिन के हैल्परों को 5000 और ऑपरेटरों को 6000-6300 रुपये। महीने में एक दिन फैक्ट्री बन्द रहती है, बाकी रविवारों के काम को ओवर टाइम कहते हैं और भुगतान सिंगल रेट से। सात सौ मजदूरों में ई.एस.आई. व पी.एफ. 80 के ही हैं। प्लॉट 96 वाली फैक्ट्री को बन्द दिखाते हैं जबकि इसमें भी प्लॉट 95 जैसे ही कपड़ों की रंगाई होती। कैन्टीन नहीं है और 12 घण्टे के दौरान फैक्ट्री से बाहर नहीं निकल सकते। तनखा हर महीने देरी से — कुछ ठेकेदारों ने जनवरी की तनखा 18 फरवरी को दी और एक ठेकेदार ने तो दिसम्बर तथा जनवरी की तनखायें आज 19 फरवरी तक नहीं दी हैं। पीने का पानी खारा है। शौचालय बहुत गन्दे — पानी नहीं, मशीन पर से ले जाना पड़ता है, दरवाजे टूटे हैं।"

ईस्टर्न मेडिकिट वरकर : "उद्योग विहार, गुड़गाँव स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में जनवरी की तनखा स्थाई मजदूरों को 15 फरवरी को और कैजुअल वरकरों को 24 फरवरी को दी — नोटिस लगाया था कि 21 को देंगे पर दी 24 को। दिसम्बर में किये ओवर टाइम के पैसे कैजुअल वरकरों को 17 फरवरी को दिये..... 11 फरवरी को यह पैसे माँगने पर मैनेजमेन्ट ने 4 को नौकरी से निकाला। प्लॉट 292 में 22 जनवरी को पुलिस आई तब मैनेजमेन्ट बोली थी कि पैसे दे देंगे और फिर 20-22 कैजुअल वरकर नौकरी से निकाल दिये थे।"

डीटेल्स मजदूर : "डी-30 ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले 70 सिलाई कारीगरों को मैनेजमेन्ट ने फरवरी-अन्त में कम्पनी की फरीदाबाद में नई फैक्ट्री में जाने को कहा। मजदूरों ने इनकार किया और मैनेजमेन्ट ने उनका गेट रोक दिया। यूनियन ने इन टेलरों को 25-26-27-28 फरवरी को फैक्ट्री गेट पर बैठाया। कम्पनी ने बाउन्सर बुलाये। बाउन्सरों ने 28 फरवरी को सुबह 9 बजे मजदूरों से मारपीट की, यूनियन लीडर के फोन पर पुलिस आई। मजदूर 28 फरवरी की हड़ताल के प्रदर्शन में चले गये। मैनेजमेन्ट और यूनियन में 52, 000 रुपये में हिसाब की बातें, पर कारीगर नहीं मान रहे। श्रम विभाग में तारीख। इस समय फिनिशिंग विभाग में 150 हैल्परों की तनखा 5000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। सवा दो सौ सिलाई कारीगर पीस रेट पर हैं और इनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। लफड़े की वजह से अभी 12 की बजाय 8 घण्टे ड्युटी है और रविवार को छुट्टी।"

जे बी एम श्रमिक : "प्लॉट 1 सैक्टर-8 आई.एम.टी. मानेसर में मारुति सुजुकी परिसर के अन्दर स्थित बड़ी फैक्ट्री में 8-8 घण्टे की तीन शिफ्ट हैं पर मजदूरों को जबरन 12-14 घण्टे रोकते हैं। महीने में 70-100 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। बहुत पावर प्रेस हैं, बड़ी-बड़ी पावर प्रेस हैं, एक्सीडेन्ट होते रहते हैं, हाथ-पैर कटते हैं, ई.एस.आई. भेज देते हैं। बीस फरवरी को एक मजदूर का पैर कटा, उसकी ई.एस.आई. नहीं थी, प्रायवेट में उपचार, पाँच टाँके आये — घायल मजदूर अपने पैसों से इलाज करवाये। वैल्डिंग विभाग में भर्ती के समय तनखा 8600 रुपये बताते हैं पर काम करने लगने पर तीन रेट लगाते हैं — 6000, 7500, 8000 रुपये।"

ओरचिड ओवरसीज कामगार : "60-61 डी उद्योग विहार फेज-5, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों की रोज सुबह 7 से रात 9½ की ड्युटी। पुरुष मजदूरों को सुबह 9 से रात 10 हर रोज और महीने में 15 बार अगली सुबह 4 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ **नेक्सट, पाल्समी, स्पीड** के परिधान तैयार होते हैं। साहब गाली देते हैं।"

एडिगियर इन्टरनेशनल वरकर : "प्लॉट 150 सैक्टर-4 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से साँय 6 की शिफ्ट है.....कार्ड पंच 6 बजे। जबकि, महिला मजदूरों को रोज रात 8 बजे छोड़ते हैं। पुरुष सिलाई कारीगरों को रात 8 बजे और महीने में 13-14 रोज रात 1 बजे छोड़ते हैं। फिनिशिंग विभाग में 250 होने चाहियें पर 125 हैं इसलिये पुरुष मजदूर रोज रात 1 बजे तक तथा महीने में 7-8 बार अगली सुबह 4 बजे तक काम करते हैं। एक भी दिन काम बन्द नहीं, महीने के तीसों दिन फैक्ट्री चलती है। हाँ, रविवार को टेलरों को साँय 4 बजे और फिनिशिंग वालों को साँय 6 बजे छोड़ देते हैं। कागजों में महीने में 8-10 घण्टे ओवर टाइम दिखाते हैं.... 8 फरवरी को प्रोडक्शन जनरल मैनेजर ने मेन गेट पर मजदूरों के सामने फिनिशिंग इन्चार्ज को थप्पड़ मार कर निकाल दिया क्योंकि वह मजदूरों को ओवर टाइम पर नहीं रोक पाया था। फैक्ट्री में **पूमा, जमूरी, एडिडास, डबनम, पीटर इंगलैण्ड, मैक्सिको, रीबौक** के कपड़े तैयार होते हैं। कागजों में 350 सिलाई कारीगर तनखा पर हैं लेकिन वास्तव में यह पीस रेट पर हैं और टेलरों तथा प्रेसमैनों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में 70-75 महिला मजदूर हैं पर कागजों में 16 ही दिखा रखी हैं — जाँच वाले आते हैं तब बाहर या बगल की फैक्ट्री में भेज देते हैं, जनवरी में यह तीन बार। तनखा हर महीने देरी से.....प्रशासनिक जनरल मैनेजर बार-बार **(बाकी पेज चार पर)**

टोहाना से

फतेहाबाद जिले में टोहाना कस्बे में 66 किलोमीटर हिसार रोड़ पर **नूकेम लिमिटेड एम डी एफ डिविजन** फैक्ट्री में प्लाई बनती थी। नूकेम की फरीदाबाद स्थित फैक्ट्रियों की ही तरह टोहाना फैक्ट्री में तनखायें बकाया होती गई। स्टाफ की फरवरी 2010 से अगस्त 2010 के महीनों की तनखा बकाया...... विरोध बढने पर सितम्बर 2010 की तनखा दी। और फिर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी 2011 की तनखायें दी। प्लाई बनाने का कच्चा सामान नहीं आने की बात कर कम्पनी ने 28 फरवरी 2011 को उत्पादन बन्द कर दिया। स्टाफ के 60 सदस्यों ने अगले रोज, 1 मार्च से बकाया तनखाओं के लिये जनरल मैनेजर के कार्यालय के समक्ष धरना आरम्भ किया। श्रम निरीक्षक तथा श्रम अधिकारी 4 मार्च को पहुँचे और जनरल मैनेजर ने घाटे की बात की तथा बकाया वेतन के शीघ्र भुगतान का आश्वासन दिया। फिर, अनुशासनहीनता और दुर्व्यवहार के आरोप लगा कर मैनेजमेन्ट ने 5 मार्च की रात फैक्ट्री पर ताला लगा दिया। यूनियन प्रधान ने कहा कि 120 मजदूरों का प्रबंधन से कोई भी विवाद नहीं है। लेकिन स्टाफ के लोग और मजदूर जुड़ते गये। बुधवार, 9 मार्च 2011 को नूकेम कर्मियों द्वारा हिसार रोड़ जाम। जिला प्रशासन द्वारा आश्वासन। मैनेजमेन्ट ने 11 मार्च को तालाबन्दी हटाई। लेकिन वेतन के स्थान पर सिर्फ आश्वासन..... और वार्तायें। दिसम्बर में 15 दिन का आश्वासन – वो 15 दिन मार्च-आरम्भ तक पूरे नहीं हुये हैं। स्टाफ और मजदूर फैक्ट्री पर रहते हैं। बैंक वाले फैक्ट्री पर अपना ताला लगाने आये तो उन्हें ताला नहीं लगाने दिया। टोहाना के एस डी एम कार्यालय पर नूकेम कर्मी 4 मार्च 2012 को धरना-प्रदर्शन कर रहे थे।■

सुजुकी अप्रेन्टिस

सुजुकी पावरट्रेन एण्ड ट्रान्समिशन आई.टी.आई. अप्रेन्टिस : प्लॉट 1 ए सैक्टर-8 आई. एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री मे अलग-अलग आई.टी.आई से आये हम 245 अप्रेन्टिस हैं। अपनी-अपनी ट्रेड में कार्य देखने, ध्यान से देखने, अनुभव करने और सीखने के लिये हमें यहाँ भेजा गया है। इसलिये हमारी ई.एस.आई. नहीं होती और हमारी जनरल शिफ्ट में उपस्थिति का नियम है। सप्ताह में एक दिन नजदीक की आई.टी.आई. में शिक्षा के लिये जाने का प्रावधान है। लेकिन यहाँ सुजुकी कम्पनी की मनमर्जी है। कम्पनी की आवश्यकता अनुसार हमें कार इन्जन प्लान्ट, ट्रान्समिशन प्लान्ट अथवा दुपहिया इन्जन प्लान्ट में आई.टी.आई. वाली ट्रेड से भिन्न कार्य में लगा देते हैं। जनरल शिफ्ट की बजाय हमारी ए, बी और सी शिफ्टों में ड्युटी है। देखने देने, अनुभव करने, सीखने-समझने देने की बजाय कम्पनी हमें सीधे उत्पादन कार्य में झौंक देती है। टारगेट अनुसार हम से जबरन काम करवाते हैं। कुछ सुपरवाइजर बहुत धमकाते हैं। सुबह 7 की शिफ्ट में पौने सात बजे विभाग में और लाइन चलने से दो मिनट पहले, 6 बज कर 58 मिनट पर लाइन पर। स्टेशन पर लगातार खड़े-खड़े काम करने में बहुत परेशानी होती है। एक ही काम, 8 घण्टे ही नहीं, हर रोज़ एक ही काम बहुत बोझिल लगता है। यह तो आपसपास वाले स्थाई मजदूरों, ट्रेनी, ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों के साथ हँसी-मजाक हैं कि हम टिके हैं। इधर मैनेजमेन्ट-यूनियन समझौते में पैसों के साथ प्रोडक्शन बढा दिया है जिससे काम का दबाव बहुत बढ गया है, हमें खुद को धक्के मारने पड़ते हैं। कई स्थानों पर तो बिलकुल फुर्सत नहीं मिलती – ट्रान्समिशन प्लान्ट में असेम्बली लाइनें ऐसी हैं और इन्हें हम सबसे खतरनाक जगह कहते हैं। इधर भोजन भी खराब हुआ है और कैन्टीन में 6 लम्बी लाइन लगती हैं – निगलो और भागो क्योंकि लाइन पर 1 मिनट देरी से पहुँचने पर बहुत परेशान करते हैं। फैक्ट्री में तरह-तरह के भेदभाव हैं। भोजन और चाय के अप्रेन्टिस के 16 रुपये रोज काटते हैं पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों के नहीं काटते। स्थाई मजदूर, ट्रेनी, अप्रेन्टिस को रात्रि भत्ते के तौर पर बी शिफ्ट में 35 रुपये और सी शिफ्ट में 50 रुपये देते हैं पर ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों को यह नहीं देते। सी शिफ्ट में स्थाई मजदूरों को सुबह 7 बजे छोड़ते हैं पर अप्रेन्टिसों को डेढ घण्टे बाद, 8½ बजे छोड़ते हैं। तनखाओं में तो बहुत फर्क हैं ही, बस के मामले में भी दुभान्त है। मशीन में प्रोब्लम आने पर अप्रेन्टिस किसी से पूछते हैं तो कहते हैं कि आगे की लाइन चलाओ, प्रोडक्शन रुक जायेगा.... समय के अभाव में बताते नहीं। अप्रेन्टिस की कोई क्लास नहीं लगती, न तो फैक्ट्री के अन्दर और न फैक्ट्री के बाहर। बस लाइन चलाओ। काम का दबाव इतना ज्यादा है कि अप्रेन्टिस पूरी फैक्ट्री घूम कर देख भी नहीं पाते। आठ घण्टे ओवर टाइम के 150 रुपये देते थे, अब 240 रुपये किये हैं और बदले में छुट्टी का प्रावधान भी है – घर जाने के लिये हम ओवर टाइम से छुट्टी एकत्र करते हैं। अप्रेन्टिस का दौर पूरा करने के बाद अब स्थाई नौकरी नहीं देते। एक वर्ष अप्रेन्टिस रहने के बाद फिर ट्रेनी अथवा ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर के तौर पर भी कम ही रखते हैं। अप्रेन्टिस के रूप में हम कम्पनियों के लिये बहुत सस्ते मजदूर हैं।■

शर्तों पर हस्ताक्षर

सीनियर फ्लैक्सोनिक्स, प्लॉट 89 सैक्टर-8 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में 9 जनवरी को मैनेजमेन्ट ने शर्तों पर हस्ताक्षर को फैक्ट्री में प्रवेश के लिये अनिवार्य किया। किसी स्थाई अथवा अस्थाई मजदूर ने दस्तखत नहीं किये, सब मजदूर फैक्ट्री गेट के बाहर बैठे। श्रम विभाग में शिकायत और तारीखें। नये मजदूरों और स्टाफ के जरिये फैक्ट्री में उत्पादन। श्रम विभाग कार्यालय पर प्रदर्शन, यूनियनों द्वारा फैक्ट्री गेट पर सभा, औद्योगिक क्षेत्र में प्रदर्शन, डी.सी. कार्यालय पर जुलूस..... **सीनियर फ्लैक्सोनिक्स मजदूर:** "27 फरवरी को मजबूरी में समझौता करना पड़ा। चार स्थाई मजदूर निलम्बित रहेंगे और 109 अस्थाई मजदूरों में से 60 को ही कम्पनी ड्युटी पर रखेगी। हमारी माँगें आई-गई हो गई हैं।"

मजदूरों पर कोई बड़ा हमला करना हो अथवा जकड़ ढीली करने में जुटे मजदूरों पर जकड़ बनाये रखनी हो तब शर्तों पर हस्ताक्षर को फैक्ट्री में प्रवेश के लिये अनिवार्य बनाना कम्पनियों की जाँची-परखी शतरंज की चाल है। शर्तों पर दस्तखत को नेता लोग हाथ कटवाना बताते हैं हालाँकि तथ्य यह है कि नौकरी लगते समय शायद ही कोई देखती-देखता है कि क्या-क्या शर्तें हैं। लीडर लोग शर्तों पर हस्ताक्षर की अनिवार्यता को गैर-कानूनी तालाबन्दी कहते हैं। आमतौर पर मजदूर शर्तों पर दस्तखत नहीं करते और फैक्ट्री के बाहर एकत्र होते हैं। मैनेजमेन्टें इसे मजदूरों द्वारा गैर-कानूनी हड़ताल घोषित करती हैं। एक-दो-चार महीने फैक्ट्री से बाहर बैठाये मजदूर कम्पनी की आवश्यकता अनुसार कमजोर पड़ जाते हैं और मैनेजमेन्ट व यूनियन के बीच समझौता हो जाता है। शर्तों के जाल में फँस कर सीनियर फ्लैक्सोनिक्स के मजदूर भी छटपटाये हैं। फैक्ट्री गेट पर बैठना, श्रम विभाग में तारीखें, बीस-पच्चीस दिन में प्रदर्शन और जब-तब समर्थन में सभा **जी के एन ड्राइवलाइन, सेन्डेन विकास, रीको ऑटो, डेन्सो, विवा ग्लोबल, सीनियर फ्लैक्सोनिक्स** मजदूरों के लिये दुखदायी परिणाम ही लिये थी। इसलिये फैक्ट्री से बाहर कर दिये जाने पर आसपास के मजदूरों के साथ तालमेलों को बढाने में जुट जाना बनता है। फैक्ट्री के बाहर होते हैं तब तालमेलों के लिये समय भी खूब रहता है और ऊर्जा की तो भरमार रहती है। मजदूरों के बीच तालमेलों का बढना हर समस्या का समाधान तो लिये ही है, यह नई समाज रचना के पथ पर बढना भी है।■

(पेज तीन का शेष)

बेटे की कसम खाता है – मजदूर पूछते हैं कि कितनी बार कसम तोड़ोगे? नवम्बर की तनखा 31 दिसम्बर को दी थी। दिसम्बर की 2 फरवरी को दी और जनवरी की तनखा आधे मजदूरों को आज 21 फरवरी तक नहीं दी है.... कासन, बासगाँव, नाहरपुर में एडिगियर के नाम पर मकान मालिक किराये पर कमरा देते (कम्पनी की आई.एम.टी. में तीन फैक्ट्री हैं)। इधर 24 फरवरी को शिपमेन्ट भेजने के चक्कर में 13 फरवरी से फिनिशिंग में रोज रात 1 तक और चार बार अगली सुबह 4 बजे तक काम के बाद फिर सुबह 9 से काम के कारण प्रेसमैन बीमार पड़ गये, दिहाड़ी पर नये लाये हैं।"

क्लच ऑटो मजदूर : "12/4 मथुरा रोड़ फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में **एस्कोर्ट्स, आयशर, अशोक लेलैण्ड,** मारुति सुजुकी वाहनों के हिस्से बनते हैं। यहाँ जनवरी की तनखा आधे मजदूरों को 13 फरवरी को दी और आधों को आज 27 फरवरी तक नहीं दी है...." **महारानी ऑफ इण्डिया/डिस्ट्रिक कपूर श्रमिक :** "368......

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14